[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3458

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

''कथक नृत्य में नवाचार और डॉ. सुचित्रा हरमळकर''

डॉ. शोभना जोशी
हिन्दी विभाग
म.ल.बा.शा. स्नाकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इंदौर

कवि जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध पंक्तियाँ हैं –

पुरातनता का यह निर्मोक, सहन करती न प्रकृति पल एक।
नित्य–नूतनता का आनंद, किये हैं परिवर्तन में टेक।।1

अर्थात् प्रकृति पुरातन का वहन पल भर के लिए भी नहीं करती है। नित्य नवीनता आनंददायी होती है अतः प्रकृति परिवर्तन की टेक पर, नित्य नवीन रूप धारण करती है। इसीलिए प्रकृति रमणीय है। प्रकृति में मिट्टी, जल, हवा, अग्नि है जो हमारे संपर्क में है और अंतरिक्ष जो दृश्यमान है। इन मुख्य तत्वों के अतिरिक्त प्रकृति के अंग हैं– समस्त, जल, थल, नभचर–जीव, जंगल। जंगल में वृक्ष, पौधे, लताएँ हैं। प्रकृति के ये सभी अंग वैविध्य से भरपूर है। पर जल तृषा शान्त करता है, मिट्टी में उर्वरता होती है, हवा प्राण देती है, वृक्ष छाया, लकड़ी, फल, फूल औषधि देते हैं, मिट्टी संभालते हैं; ये मूलभूत गुण सभी प्रकार के वृक्षों में न्यूनाधिक होते है और जल में भी किन्तु परिवर्तन की प्रक्रिया सतत् प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष प्रकृति में चलती रहती है। प्राकृतिक उपादनों के मूलभूत गुण अद्यतन एक हैं यह मानों परंपरा है और नित्य परिवर्तन प्रकृति का नवाचार।

मनुष्य प्रकृति का एक हिस्सा है। प्रकृति की सर्वाधिक कृपा जिस पर है। चिंतन– मनन, सोच–विचार की शक्ति के साथ प्रकृति की तरह कलात्मक सृजन की शक्ति भी उसे प्राप्त है। प्रकृति की ऐसी संतान मनुष्य कैसे पुरातन को यथावत् रहने दे सकता है। परिवर्तन की, नवाचार की यह गति विश्व के ग्राम में बदलने से तीव्र और अपरिहार्य हुई है।

नव्य चेतना से पुष्ट आचार ही नवाचार है। नवाचार, नव+आ+चर् से बना है। नव–नया, आ–पूर्णतः, चर्–चलना। तब कला के संदर्भ में नवाचार का संभावित अर्थ है, पूर्णतः नयी गति, नयी दिशा में।

नृत्य कला का आंरभ आदिम मानव समाज से है। जब वे युद्ध अथवा शिकार के बाद, शिकार को पकाते हुए उसके चारों और उन्मुक्त नाचते थे। किन्तु हजारों साल की यात्रा करते हुए भारतीय नृत्य कला के प्रमुख तीनों रूपों शास्त्रीय, आदिवासी एवं ग्राम्य में परिवर्तन आया है। इतनी दीर्घजीवी कला नितान्त प्रारंभिक स्वरूप मे रहे संभव नहीं है। कला साधकों ने अपनी कल्पनाओं–भावों–संवेदनाओं को मूर्त्त रूप देते हुए उसमें अपनी क्षमताओं के अनुसार समसामयिक परिवर्तन किये है। परंपरा और रूढ़ि में अंतर स्पष्ट होने पर अपने समय के सच को जीने वाली कला, कालातीत होती है। किसी समय कोई परंपरा, रूढ़ हो जाती है उस रूढ़ अवरोध को तोड़कर परंपरा को जीवित रखते हुए नवस्पंदन देना ही श्रेष्ठ नवाचार है। शास्त्रीय नृत्य में ''नवाचार'' प्रस्तुति एवं विषय के माध्यम से संभव है क्योंकि ''ताल'' और ''लय'' तो छूटना नहीं है वह ''सुदृढ़ परंपरा'' है।

इसी वैचारिक पृष्ठभूमि में डॉ. सुचित्रा हरमलकर ने नृत्यकला में पारंपरिकता को सहजते हुए नृत्य की कथक विधा में नवीन कल्पनाओं के साथ मनोरम नृत्य संयोजित किये हैं।

''सम्प्रति कथक की अंतर्राष्ट्रीय कलाकार डॉ. सुचित्रा हरमलकर नृत्य विभाग (महारानी लक्ष्मीबाई शा. स्नाकतोत्तर कन्या महाविद्यालय) की अध्यक्ष हैं। रायगढ़ घराने की शीर्षस्थ नृत्यांगना है। इन्होंने रायगढ़ घराने के प्रख्यात नर्त्तक स्व. पं. कार्त्तिकराम जी एवं पं. रामलाल जी ने शिक्षा प्राप्त की। डॉ. सुचित्रा ने कथक की 200 से अधिक सफल प्रस्तुतियाँ दी हैं। वे सफल अध्यापक एवं कोरियोग्राफर भी हैं। दूरदर्शन की स्थापित कलाकार है। इनके कई शोधालेख राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। इन्हें श्रृंगारमणि अभिनव कला सम्मान, मराठी गौरव आदि सम्मान से नवाज़ा गया है। शताधिक शिष्य–शिष्याओं ने इनसे नृत्य शिक्षा प्राप्त की है। इनकी पाँच छात्राओं को सी.सी. आर.टी. भारत सरकार की छात्रवृत्ति प्राप्त हुई है और एक छात्रा को राष्ट्रीय स्तर पर छात्रवृत्ति मिली है। इन्हे स्वयं उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी, भोपाल म. प्र. शासन की कनिष्ठ एवं वरिष्ठ छात्रवृत्ति मिली है। छह छात्राएँ इनके निर्देशन में शोधकार्य कर रही हैं। इनमे से तीन द्वारा शोध प्रबंध किया जा चुका है।सन् 1999 में इनकी खजुराहो नृत्य समारोह में अविस्मरणीय प्रस्तुति रही। इसके अतिरिक्त

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

शरच्चंद्रिका महोत्सव नई दिल्ली, म.प्र. उत्सव भोपाल, भोज महोत्सव, संगीत नाटक अकादमी में अत्यंत सराहनीय प्रस्तुतियाँ दीं।।2

कथक भारतीय नृत्य कला परंपरा की प्रतिष्ठापूर्ण विधा है। कहते हैं कि संतान एवं शिष्य–शिष्याएँ वे उत्तम हैं जो प्राप्त विरासत–परंपरा की सुदृढ़ वाहक तो बने ही बल्कि उसमें कुछ अभिवृद्धि भी करें। डॉ. सुचित्रा इस ''कहनी'' पर खरी हैं। उन्होंने कथक नृत्य का गुरु–शिष्य परंपरा में प्रशिक्षण लिया, कड़ी साधना की और परंपरा को जीवित रखते हुए नवीन कल्पनाओं को कथक में साकार कर कथक की सुदीर्घ परंपरा में अपना देय भी अर्पित किया।

मूलतः कथक ''एकल'' प्रस्तुति की नृत्य विधा है हालांकि ''युगल–प्रस्तुति'' भी दीर्घावधि से प्रारंभ हो गई है। ''प्रिया–प्रताप पवार'', ''पुरू–विभा–दाधीच'' आदि ने इसी परंपरा को बढ़ाया। इसी परिवर्तन को निरंतर रखते हुए डॉ. सुचित्रा ने अपनी तरह के नये प्रयोग के साथ सन् 2000 से ''समूह नृत्य' संयोजित किये। उनका मानना है कि ''समूह में अपार संभावनाएँ होती है। नवीन उद्भावनाएँ जनमती है। किसी भी विषय को नये एवं सफल तरीके से प्रस्तुत करना यह कलाकार की सर्जनात्मक प्रतिभा पर निर्भर करता है।''3

दीर्घावधि तक कथक के विषय पौराणिक रहे। इन्होंने ''अनुकृति'' नाम से कथक नृत्य नाटिका संयोजित की जिसमें माँ दुर्गा, साध्वी मीरा, रानी पद्मिनी, महारानी लक्ष्मीबाई, प्रातः स्मरणीया माता अहिल्या एवं भारतमाता के जीवन की रोमांचकारी झलकियाँ हैं। इस नृत्य नाटिका में मंच त्रिस्तरीय रखा गया है। प्रथम स्तर पर इन नारी चरित्रों का प्रदर्शन एवं द्वितीय, तृतीय स्तर नृत्य के लिए निश्चित किये गये। चरित्र के पीछे युग से संबंधित सज्जा की गई। संगत–वाद्यों में नया प्रयोग करते हुए ड्रम तथा सिंथेसाइजर भी प्रयुक्त है। इस नाटिका हेतु नितांत नवीन गीतलेखन हुआ, नई पटकथा रची गई और अपने ढंग का नया संगीत सृजन किया गया।

डॉ. सुचित्रा की दूसरी नवीन संयोजना है– 'नवलरंगिनी– गाथा रघुनंदन की''। यह नृत्य–नाट्य मराठी के प्रख्यात कवि श्री ग.दि. माडगुलकर की सुप्रसिद्ध काव्यकृति ''गीत रामायण'' पर आधृत है। इसे सस्वर गाते हुए प्रस्तुत किया जाता रहा है। इस कृति में 56 गीत है। इनमें से नृत्य–प्रधान गीतों को चयन कर, नृत्य के माध्यम से सन् 2006 में इसकी अभिनव प्रस्तुति की गई है। पंडित रूद्रदत्त मिश्र ने हिन्दी में इसका काव्यरूपांतर किया है। उसका भी प्रदर्शन किया गया है। इस नृत्यरूपांतर को गुणीजनों का अभूतपूर्व प्रतिसाद मिला है। यह नृत्य नाट्य, रामलीला से भिन्न प्रकार का है। गीतों का संयोजन इस प्रकार किया गया है कि पूरी राम कथा डेढ़ घण्टे में समाहित हुई। इसमें दो तरह के दृश्य हैं। एक दृश्य जिसमें 'लव कुश' कथा कह रहे हैं, दूसरे में प्रसंगानुसार दृश्य संयोजना है। ध्यातव्य है कि कथक का प्रांरभ त्रेतायुग में लवकुश से ही माना गया है। रथ के जाने के दृश्य को वनवासी स्त्रियों को तिर्यक् रूप से दिखाकर जीवंत किया गया है। इस संयोजना का वैशिष्ट्य है कि इसमें किसी भी उपकरण का उपयोग नहीं किया गया है। संगीत में, सतत् समानांतर लय का नवीन संयोजन है। गीतों की गति नृत्य के साथ बढ़ाई गई है। कुछ पंक्तियों को भी अपने ढंग से संयोजित किया गया है। इसमें कथावाचन है। इस संयोजना का दूसरा वैशिष्ट्य है इसमें किसी कलाकार की वेशभूषा चरित्रानुसार नहीं होकर हर नये गीत में बदली गइ है। प्रकाश संयोजन से 'शोक' दर्शाया गया है। इस प्रस्तुति की सबसे अहम् तीसरी विशेषता यह है कि इसमें कहीं ''श्री सीताराम'' दिखाए नहीं गये हैं।

डॉ. सुचित्रा की ''नव्य एवं भव्य'' इतिहास रचने वाली नृत्य नाटिका है ''अमृतस्य नर्मदा–अतीत के पन्नों पर लिखी एक नदी की जीवन गाथा।''। माँ नर्मदा म.प्र. की ''जीवन रेखा'' कही जाती हैं। जिसके साथ विकास के नाम पर खिलवाड़ किया जा रहा है। जिससे उसका जल स्तर घट रहा है तो दूसरी ओर वह प्रदूषित भी हो रही है। इस नृत्य नाटिका में माँ नर्मदा की उत्पत्ति, उसके प्रवाह–सौंदर्य को जीवंत किया गया है। पौराणिक आख्यान के साथ प्रदूषण से होती पीड़ा की अभिव्यक्ति है।

इस नाटिका में द्विस्तरीय मंच का उपयोग है। माँ नर्मदा, आदिवासी संस्कृति की पोषक है अतः उनके नृत्यों को भी कथक के साथ इस तरह सम्बद्ध किया गया है कि कथा प्रवाहमान रहती है और प्रभाव में कई गुना अभिवृद्धि होती है।

पारंपरिक गीत ''नर्मदाष्टक'' की प्रस्तुति भी है और व्यथा–कथा के लिए नये गीत भी रचे गये हैं।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

अत्यंत प्राचीन ध्रुपद गायन है। जिसे प्रख्यात गुंदेचा बंधुओं ने गाया है और संपूर्ण संगीत–संयोजन भी किया है। चूँकि प्रस्तुतियाँ भिन्न स्थानों पर होती रहती हैं अतः इस नाटिका का संगीत रिकार्डेड है हालांकि शास्त्रीय विधा में ऐसा नहीं होता है पर समय की मांग के कारण यह अनिवार्य नवीन प्रयोग है। प्राचीन ध्रुपद के साथ, आधुनिक सिंथेसाइजर भी प्रयुक्त है।

नव्यतम प्रकाश व्यवस्था है। नीले–हरे रंग का सम्मिश्रण जो नदी को जीवंत करता है। सफेद 'साइक्लोरामा'' का प्रयोग है। नृत्यांगनाओं की वेशभूषा नीले आसमानी रंग की है, जो लहरदार नदी को जीवंत कर सके। इस तरह नूतन प्रयोगों के साथ ''अमृतस्य नर्मदा'' नृत्य नाटिका में लोकनृत्य एवं कथक का अमृत संचित है जो प्रस्तुति के समय संवेदनशील दर्शकों को आप्लावित करता है। इसके अतिरिक्त डॉ. सुचित्रा ने मालवी लोकनृत्य एवं कथक का भी अद्‌भुत सम्मिश्रण किया है। जिसमें दोनों नृत्य समानांतर चलते हुए भी इस तरह घुले–मिले है कि कहीं कला आस्वादन में व्यवधान नहीं होता।

डॉ. सुचित्रा गुरु शिष्य परंपरा रूप में ''कार्त्तिक कला अकादमी'' संचालित करती हैं इस अकादमी में भी वे रूढ़ होती परंपरा से कुछ हटकर रच रही हैं। वे अपनी शिष्य–शिष्याओं को समय से परिचित कराते हुए समय की आवश्यकताओं के साथ, कथक की परंपरा का मान रखते हुए मंचीय प्रस्तुतियों के लिए तैयार करती हैं। कैसे अल्पसमय में विलंबित, मध्य, द्रुत लय को संयोजित किया जाए और अधूरापन भी न लगे। पांरपरिक थाट को आठ–दस मिनिट में पूर्णता दी जाए। यह सारा प्रशिक्षण वे कथक सिखाते हुए देती रहती हैं। संभवतः इसीलिए उनकी शिष्याएँ राष्ट्रीय युवा उत्सव में सतत् प्रथम स्थान प्राप्त करती रही हैं।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण 'नवाचार' (पारंपरिक अर्थ से हटकर) डॉ. सुचित्रा का यह है कि वे अपनी शिष्याओं को मंच भागीदारी के समय समान अवसर देते हुए, स्वयं उसी भूमिका का निर्वाह करती है, जो गरिमामय रहे। युवा शिष्याएँ उनके अनुकूल अवसर पाती हैं। गुरु–शिष्य पंरपरा में आस्थावान डॉ. सुचित्रा लोकतांत्रिक स्वभाव की है। समय की नब्ज को पहचानने वाली गुरु हैं तो अनुशासित, विनम्र गरिमामय कलाकार हैं। मिलनसार, खुशमिजाज इंसान और बेहतरीन मित्र हैं। उनकी यही खासियतें उनके नवाचार को जीवंत और रमणीय बनाती है।

संदर्भ–

1) कामायनी – जयशंकर प्रसाद श्रद्धासर्ग पद 94
2) स्पंदन साक्षात्कार – डॉ. सुचित्रा हरमळकर पृ. 86
3) डॉ. सुचित्रा से बातचीत का अंश
4) सहायक ग्रंथ : कथक शिक्षण–डॉ. पुरु दाधीच